AGPE THE ROYAL GONDWANA RESEARCH JOURNAL
OF HISTORY, SCIENCE, ECONOMIC, POLITICAL AND SOCIAL SCIENCE
ISSN (E): 2583:1348 | A Peer reviewed | Open Accsess & Indexed
Volume 03 | Issue 05 | June 2022| *www.agpegondwanajournal.co.in* | Page No. 23-31

सामाजिक व राजनैतिक कार्यों में डॉ.खूबचंद बघेल की सहभागिता का विश्लेषणात्मक अध्ययन

संध्या जायसवाल *[1] एंव विष्णु कुमार सलाम[2]

1. **विष्णु कुमार सलाम,** एम.फिल.(राजनीति विज्ञान), डॉ.सी.वी.रामन विश्वविद्यालय, करगी रोड,कोटा,बिलासपुर (छ.ग.)
2. **प्रो.डॉ. संध्या जायसवाल,** सामाजिक विज्ञान विभाग (राजनीति विज्ञान), डॉ.सी.वी.रामन विश्वविद्यालय, करगी रोड,कोटा,बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश -

छत्तीसगढ़ राज्य का प्रथम स्वप्न दृष्टा के नाम से जाने जाने वाले डॉ.खूबचंद बघेल छत्तीसगढ़ के महान सपूतों में से एक हैंप् डॉ.खूबचंद बघेल का छत्तीसगढ़ राज्य के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। डॉ. खूबचंद बघेल जब छत्तीसगढ़ीया लोगों के अधिकारों के लिए आवाज उठा रहे थे,तब उनकी आवाज पूरे भारत और पूरी दुनिया में ठीक छत्तीसगढ़िया लोगों की तरह उनकी आवाजों का समर्थन कर रही थी। उनके लिए छत्तीसगढ़ राज्य का अर्थ केवल राजनीतिक सत्ता प्राप्त कर लेना भर नहीं था, बल्कि शोषण से मुक्ति और सम्मानित जीवन के लक्ष्य को हासिल करना भी था। डॉ. खूबचंद बघेल की भावना के मूल में क्षेत्रीयता से कहीं अधिक राष्ट्रीयता पूरी प्रबलता के साथ समाहित थी। उन्होंने समाज में व्याप्त अनेक बुराइयों को दूर करने के लिए अनेक कदम उठाए । समाज में व्याप्त छुआछूत, ऊंच-नीच तथा जाति प्रथा की कुरीतियों को दूर करने का भरसक प्रयास किया । इसके लिए उन्हें अपने ही समाज के लोगों का विरोध का सामना करना पड़ा और उन्हें समाज से बहिष्कृत कर दिया गया। उन्होंने सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए अनेक नाटकों का मंचन किया

प्रस्तावना -

भारत की आजादी के आंदोलन में सक्रिय योगदान देकर एवं तत्कालीन भारत में चल रहे राजनीतिक - सामाजिक परिवर्तन तथा आर्थिक मुक्ति आंदोलन में हिस्सा लेकर जिन्होंने इतिहास रचा है, उनमें से एक सशक्त व्यक्ति डॉ. खूबचंद बघेल भी हैं। छत्तीसगढ़ राज्य जो 1 नवंबर 2000 से अस्तित्व में आया उसके प्रथम स्वप्नदृष्टा

CORRESPONDING AUTHOR:	RESEARCH ARTICLE
Vishnu Kumar Salam M.Phil Research Scholar, Social science Department(Political Science), Dr. C. V. Raman University, Kota, Bilaspur, Chattisgarh. Email: renusharan7@gmail.com	

डॉ. खूबचंद बघेल जी ही थे।आज भले ही उन्हें इसकी मान्यता देने में उच्चवर्ण एवं अन्य वर्ग के लोगों को हिचकिचाहट होती है, लेकिन यही ऐतिहासिक सत्य है। जाति व्यवस्था को तोड़कर समस्त मानव जाति को एक जाति के रूप में देखने की चाहत रखने वाले डॉ. खूबचंद बघेल के व्यक्तित्व में छत्तीसगढ़ की खुशबू रची बसी थी। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के लिए त्याग और बलिदान करने वालों में डॉ.साहब का नाम अग्रिम पंक्ति पर है।

डॉ.खूबचंद बघेल का सामान्य परिचय -

डॉ.खूबचंद बघेल का जन्म छत्तीसगढ़ के रायपुर जिले के पथरी गांव में 19 जुलाई सन 1900 को हुआ था। इनके पिता का नाम जुड़ावन प्रसाद एवं माता का नाम केतकी बाई था। पिता जुड़ावन प्रसाद पथरी गांव के मालगुजार परिवार से थे । जिसके कारण खेती किसानी ही उनका पुश्तैनी पेशा था। डॉ.खूबचंद बघेल की माता श्रीमती केतकी बाई स्वयं स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय थी । जिसके कारण उसे कई बार जेल भी जानी पड़ी। शासकीय सेवा से त्यागपत्र देने के बाद संपूर्ण भारत में चल रहे स्वतंत्रता प्राप्ति के आंदोलन के प्रति पूर्णतया समर्पित हो गए। दलितों एवं शोषितों के सामाजिक अपमान,छुआछूत,भेदभाव के विरुद्ध संगठन की शुरुआत की एवं 1932 में तत्कालीन मध्य भारत एवं बरार प्रांत के" हरिजन सेवक संघ" इकाई के मंत्री नियुक्त किए गए। मिनीमाता और छत्तीसगढ़ के अन्य दलित नेताओं के साथ मिलकर शैक्षणिक,सामाजिक,राजनीतिक स्तर में सुधार के लिए अनेक कार्य किए। सन 1932 के विदेशी वस्त्र बहिष्कार आंदोलन में पुनः जेल गए। उनके साथ उनके कई सहयोगियों में एक उनकी माता श्रीमती केतकी बाई भी थी।

किसी ने डॉ. खूबचंद बघेल से छत्तीसगढ़िया होने की परिभाषा पूछ ली थी,तब उन्होंने कहा था- "जो छत्तीसगढ़ के हित में अपना हित समझता है, छत्तीसगढ़ के मान- सम्मान को अपना मान- सम्मान समझता है और छत्तीसगढ़ के अपमान को अपना अपमान समझता है, वह छत्तीसगढ़िया है। चाहे वह किसी भी धर्म, जाति, भाषा, प्रांत का क्यों ना हो।" इस परिभाषा में उन्होंने अपने सपनों के छत्तीसगढ़ राज्य का स्वरूप भी प्रस्तुत कर दिया था, जिसकी राजनीतिक और भौगोलिक सीमाएं तो हो सकती थी, लेकिन उसके निवासियों के लिए सीमाओं का बंधन नहीं था। वे धर्म, जाति, भाषा और प्रांत के बंधन से मुक्त थे। शर्त केवल इतनी की छत्तीसगढ़ के हित में अपना हित और छत्तीसगढ़ के सम्मान में अपना सम्मान समझें। तो इस तरह डॉ. खूबचंद बघेल देश के भीतर एक ऐसे राज्य के निर्माण का सपना देख रहे थे, जहां समतामूलक, शोषण मुक्त समाज की रचना की जा सके। उनके लिए गैर-छत्तीसगढ़िया का अर्थ पर- प्रांतीय ना होकर निश्चित ही हर उस व्यक्ति से था जो दूसरों के शोषण में विश्वास रखता है। इस पूरी पृष्ठभूमि में एक बात बहुत साफ हो जाती है कि छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण का आंदोलन भारत का एक बड़ा सामाजिक आंदोलन भी था, जिसकी कमान डॉ.खूबचंद बघेल संभाल रहे थे।उनका गुस्सा उन लोगों के खिलाफ भी था जो छत्तीसगढ़िया होकर भी छत्तीसगढ़ी हा लोगों का शोषण कर रहे थे, या फिर शोषण का जरिया बन रहे थे। उन्हें ऐसे लोग बिल्कुल पसंद नहीं थे। उन्हें छत्तीसगढ़िया समाज में कुरीतियां फैलाने और उन्हें बढ़ावा

देना वाले लोग पसंद नहीं थे। उनका पंक्ति तोड़ो आंदोलनश् जातीय और उपजातिय प्रथाओं का विरोध, किसबा जाति के उत्थान के लिए भारतवंशी जातीय सम्मेलन , छत्तीसगढ़िया समाज में ही निहित बुराइयों का प्रतिकार था।

कार्य क्षेत्र व सामाजिक क्षेत्र-

डॉ.खूबचंद बघेल का हमेशा से सामाजिक कुरीतियों को देखकर खून खौल उठता था, वह हमेशा इन बुराइयों को समाज से दूर करने के लिए बहुत सारे प्रयास किए जिसके परिणाम स्वरूप उन्हें कई बार समाज के गुस्से का सामना भी करना पड़ा। पूरे देश की तरह छत्तीसगढ़ में भी छुआछूत, ऊंच-नीच की भावना व्याप्त थी। बात तब की है जब गांव में नाई, सतनामी समाज के लोगों के बाल नहीं काटते थे।इस व्यवस्था को देखकर स्वर्गीय अनंतराम बर्छिहा जी ने उनके बाल काटे और दाढ़ी भी बनाए इसी से क्षुब्ध होकर कुर्मी समाज के लोगों ने उनका सामाजिक बहिष्कार कर दिया, जिसे डॉक्टर साहब ने देखकर "ऊंच-नीच " नामक नाटक की रचना कर इसे प्रदर्शित किया ।इस नाटक का मंचन पहली बार रायपुर के पास स्थित चंदखुरी नामक गांव में हुआ। इसे देखने वालों में पंडित रविशंकर शुक्ल और महंत लक्ष्मीनारायण दास जी विशेष रूप से उपस्थित थे। इस नाटक में गुरु घासीदास जी के समता का संदेश निहित है, जिसके अनुसार सभी मनुष्य बराबर हैं, उनमें कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए। इस कार्यक्रम का चमत्कारी प्रभाव पड़ा।जिसके प्रभाव से ही बर्छिहा जी के सामाजिक बहिष्कार को रद्द कर दिया गया।

डॉ. खूबचंद बघेल को जातिगत भेदभाव से बहुत चिढ़ थी, उन्होंने जातिगत भेदभाव के साथ-साथ उपजातिगत भेदभाव को भी दूर करने का काम किया जिसके फलस्वरूप आज के समय में कुर्मी समाज में व्याप्त उपजाति भेदभाव को दूर किया जा सका है। इस भेदभाव को मिटाने के लिए डॉ. बघेल जी ने स्वयं मनवा कुर्मी के थे, परंतु उन्होंने अपने एक पुत्री का विवाह दिल्लीवार कुर्मी समाज में तथा सबसे छोटी बेटी का विवाह पटना के राजेश्वर पटेल जी से करवाया फलस्वरूप उन्हें समाज के क्रोध का सामना करना पड़ा,जिसके कारण उन्हें कुर्मी समाज से बहिष्कृत कर दिया गया। परंतु वे हमेशा से इस उपजाति बंधन को तोड़ने में लगे रहे।

पंक्ति तोड़ो आंदोलन -

छत्तीसगढ़ में व्याप्त एक कुप्रथा थी कि शादी में समाज के आधार पर पंक्ति निर्धारित होती थी। उसी पंक्ति में बैठकर भोजन करना होता था,जैसे मैं जिस समाज का हूं तो सिर्फ उसी समाज के पंक्ति में बैठकर भोजन कर सकता हूं। अन्य किसी पंक्ति में बैठना मेरे लिए अपराध था। इसी कुरीति को तोड़ने के लिए डॉ. खूबचंद बघेल जी ने पंक्ति तोड़ो आंदोलन शुरू किया जिसका परिणाम आज सभी लोगों के सामने है, कि अब सब मिलजुल कर किसी भी पंक्तियों में बैठकर भोजन कर पाते हैं।

भारतवंशी जातीय सम्मेलन -

किसबिन नाच किसबा जाति द्वारा किया जाने वाला एक पुश्तैनी धंधा था, जिसमें किसबा जाति के पुरुष अपनी बहन-बेटियों को विभिन्न त्योहारों में नचवाने और गवाने का काम किया करते थे। इस प्रथा को बंद करने के लिए डॉ खूबचंद बघेल जी द्वारा समाज सुधार की दृष्टि से "भारतवंशी जातीय सम्मेलन" का आयोजन मुंगेली में कराया गया जिसका असर इस जाति के लोगों पर पड़ा और वे समाज के मुख्यधारा में लौट आए।

राजनैतिक क्षेत्र-

छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण आंदोलन में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पृथक छत्तीसगढ़ राज्य के लिए सतत प्रयास करने वालों में डॉ.बघेल एक थे। ठाकुर रामकृष्ण सिंह के प्रयासों को जब सफलता नहीं मिली तब जनवरी 1956 ईस्वी को राजनांदगांव में डॉ खूबचंद बघेल की अध्यक्षता में छत्तीसगढ़ स्तरीय राजनैतिक सम्मेलन हुआ। पृथक छत्तीसगढ़ राज्य की मांग के लिए यह सम्मेलन बुलाया गया था। सन 1956 में छत्तीसगढ़ महासभा का गठन किया गया। अंचल के राजनेता, सामाजिक कार्यकर्ता, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक हस्तियां इसमें शामिल हुए।अध्यक्ष का पद बघेल को और महासचिव का पद दशरथ चौबे को दिया गया। संयुक्त सचिव का पद केयूर भूषण और हरी ठाकुर को मिला। पृथक छत्तीसगढ़ राज्य की मांग करते हुए एक प्रस्ताव शासन को भेजा गया। उस समय पंडित रविशंकर शुक्ला तत्कालीन मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री थे। वे नहीं चाहते थे कि छत्तीसगढ़ को अलग प्रदेश का दर्जा दिया जाएगा। उस समय छत्तीसगढ़ की राजनीति पर उनका अच्छा प्रभाव था। उन्होंने छत्तीसगढ़ के विधायकों में फूट डालकर इस मांग को उभरने नहीं दिया।इससे छत्तीसगढ़ की जन भावनाओं को बहुत ही आघात पहुंचा।छत्तीसगढ़ महासभा में इस बात को लेकर मतभेद हो गया कि पृथक प्रांत की मांग को लेकर चुनाव लड़ा जाए। फलस्वरूप डॉ.खूबचंद बघेल ने 1967 में छत्तीसगढ़ भातृ संघ की स्थापना की। 1967 के आम चुनाव में इस के बैनर तले विभिन्न क्षेत्रों से प्रत्याशी खड़े किए गए मगर धन के अभाव में पर्याप्त प्रचार-प्रसार ना होने के कारण इसके प्रत्याशी पराजित हुए। छत्तीसगढ़ महासभा का निष्कर्ष ठीक ही था। चुनाव लड़कर बंद मुट्ठी खुल गई शासन को यह कहने का मौका मिल गया कि जनता पृथक छत्तीसगढ़ राज्य के पक्ष में नहीं है

इस तरह डॉ. खूबचंद बघेल का संपूर्ण संघर्ष केवल छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण के लिए किया गया संघर्ष न होकर संपूर्ण मानवता के लिए किया गया संघर्ष था, जो उन्हें भारत के अग्रणी समाज- हित की पंक्ति में स्थापित करता है। इसी तरह छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण का आंदोलन भी केवल एक राजनैतिक आंदोलन न होकर भारत का एक महान सामाजिक आंदोलन था। इस आंदोलन ने अपना राजनैतिक लक्ष्य तो पा लिया है, उनकी प्रेरणा से सामाजिक लक्ष्यों को हासिल करना अब कठिन नहीं रहा।

साहित्य एवं सांस्कृतिक क्षेत्र -

साहित्य समाज का दर्पण होता है, समाज में व्याप्त विसंगति को साहित्यकार अपनी रचना में स्थान देता है, डॉ.खूबचंद बघेल के नाटकों में तात्कालिक परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण हुआ है। नाटकों में प्रमुख समस्या के

रूप में छुआछूत की भावना, अशिक्षा, बाल विवाह, शराबखोरी, आभूषणों के प्रति मोह,ग्रामीण एवं नगरीय जीवन का अंतर्द्वंद, देश प्रेम के प्रति जागरूकता का अभाव, किसानों का शोषण जैसे तात्कालिक समस्याओं को लेकर नाटककार उनका हल ढूंढने का प्रयास किया है।ऊँच-नीच नाटक में छुआछूत की भावना को मिटाकर एक सभ्य एवं सुसंस्कृत समाज की रचना करना तथा आपसी भेदभाव भुलाकर दीन-अनाथ एवं गरीबों की सेवा कर उन्हें समाज के मुख्यधारा में जोड़ना है। ताकि वह भी सभ्य समाज के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल सके समाज में छुआछूत की भावना इतनी जबरदस्त है, कि उच्च वर्गीय लोग हरिजनों को भीख देना भी पसंद नहीं करते, उनकी छाया के स्पर्श से बचते हैं जो कि हिंदू समाज के लिए बहुत बड़ा अभिशाप है। गांधीजी के अनुसार कि जब तक अस्पृश्यता रहेगी हिंदू धर्म का नाश होगा, हिंदू धर्म को बचाना है तो अस्पृश्यता के कलंक को मिटाना होगा। समाज के कर्मठ नौजवानों ने प्रतिज्ञा ली की समाज में कोई उच्च और निम्न नहीं, गांव- गांव में गांधी जी की प्रेरणा से नवयुवकों ने अछूतोद्धार के काम में तन्मय और सर्वस्व की बाजी लगा दी। हरिजन कहे जाने वाले लोग हिंदुओं के साथ मिलने लगे उनमें आपसी विश्वास और भाईचारा का माहौल बनने लगा यह युगीन चेतना का प्रभाव था कि नवयुवक-नवयुवती कम उम्र में विवाह करना पसंद नहीं करते। बाल विवाह की समस्या पहले जैसा नहीं रहा, लोगों में शिक्षा के प्रचार के साथ सोच में तब्दीली आई है,अब वे पढ़ाई-लिखाई कर अपने पैरों में खड़ा होना चाहते हैं। ऊँ-नीच में ज्ञान प्रकाश और सरला विवाह का विरोध करते हैं लेकिन सरला लड़की होने के नाते तथा सामाजिक बंधन के चलते माता-पिता के इच्छा के अनुरूप शादी कर देते हैं। लेकिन उनका अंत कितना भयंकर होता है यह पाठकों - दर्शकों से छुपा नहीं है।

स्वतंत्रता आंदोलन के समय देश की शोषित जनता को जगाने के लिए जनजीवन में रंगमंचीय नाटकों की अहम भूमिका रही। सन 1857 के गदर में पराजित होने के बाद भारतीय नवजागरण में क्षेत्रीय बोलियों एवं भाषाओं में लिखे गए छोटे-बड़े नाटकों की भूमिका महत्वपूर्ण थी। यदि भारतेंदु हरिश्चंद्र भारत दुर्दशा एवं अंधेर नगरी चौपट राजा के माध्यम से जनता की पीड़ा,राजा और प्रजा के संबंधों को उजागर करते हुए राष्ट्रीय चेतना और सामाजिक चेतना को गुम्फित करके स्वयं अभिनय के क्षेत्र में उतर जाते तो छत्तीसगढ़ अंचल में डॉ. खूबचंद बघेल ऐसे व्यक्ति थे जो शोषित वर्ग के नेता भी थे। इसलिए छत्तीसगढ़ को शोषण मुक्त देखना चाहते थे। वह आजीवन छत्तीसगढ़ अंचल में हो रहे आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं दैहिक - मानसिक शोषण के खिलाफ संघर्ष करते रहे वह इस अंचल की संस्कृति के पुरोधा थे इसलिए उनके नेतृत्व में प्रारंभ किए गए आंदोलनों में छत्तीसगढ़ राज्य का उद्देश्य स्पष्ट था, वे स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे। उनमें देशभक्ति की भावना सर्वोपरि थी वे जो भी करते राष्ट्रीय हित के लिए करते थे। छत्तीसगढ़ अंचल के सर्वांगीण विकास एवं छत्तीसगढ़ राज्य बनाने के लिए आंदोलन कर रहे थे, इसके पीछे भी उनकी राष्ट्रीय भावना थी, वे जागरूक संपन्न और शक्तिशाली छत्तीसगढ़ चाहते थे। ताकि छत्तीसगढ़ राष्ट्र के विकास एवं उसकी रक्षा के लिए अगली पंक्ति में खड़ा हो सके। उनके आंदोलन को किसी भी दृष्टि से संकुचित नहीं कहा जा सकता उनका संघर्ष एक साथ अनेक मोर्चों पर था इसलिए वे अपने सर्वस्व की बाजी लगाकर तन-मन-धन के साथ कलम और वाणी से भी मुकाबला कर रहे थे।

डॉ. खूबचंद बघेल अपने विचारों को लिपिबद्ध करने के लिए रोज डायरी एवं रजिस्टर का इस्तेमाल करते थे प्अपने लेखन में डॉ. साहब ने अपने विचारों के अलावा महत्वपूर्ण घटनाओं को भी स्थान दिया करते थे। वे सारी घटनाएं जो उनके ष्सामाजिक परिवर्तन के आंदोलन एवं राजनीतिक संघर्ष के दौरान घटी, उसका विस्तृत विवरण उनकी डायरी एवं रजिस्टरों में मिलती है। अपने लेखन एवं बातों को लोगों तक रोचक ढंग से पेश करने के लिए शेरो शायरी, कहावतें एवं मुहावरों का उपयोग कर चुटिला बनाना उनकी खूबी थी।

प्रमुख रचनाएँ -

- ऊँच-नीच, छुआछूत और जातिप्रथा को कम करने के लिए इस नाटक को लिखकर मंचन किया गया।
- करम-छड़हा, यह नाटक आम आदमी की गाथा और बेबसी को दर्शाता है।
- जनरैल सिंह, इसमें छत्तीसगढ़ के लोगों के दब्बू-पन को दूर करने का रास्ता बताया गया है।
- भारतमाता, 1962 में भारत-चीन युद्ध के समय इसे लिखकर मंचन किया गया तथा चंदा इकट्ठा कर प्रधानमंत्री राहत कोष में भिजवाया गया।

शासन की योजनाओं पर डॉ. खूबचंद बघेल के विचारों का प्रभाव -

डॉ. खूबचंद बघेल छत्तीसगढ़ राज्य का सर्वांगीण विकास चाहते थे । वह छत्तीसगढ़ राज्य तथा उसके निवासियों का किसी भी प्रकार से शोषण बर्दाश्त नहीं करते थे। किसी भी प्रकार के शोषण के विरुद्ध आवाज उठाते थे। छत्तीसगढ़ के विकास में छत्तीसगढ़ के लोगों का ही भागीदारी चाहते थे। छत्तीसगढ़ की राजनीति में छत्तीसगढ़ के लोगों का योगदान चाहते थे जो छत्तीसगढ़ की मिट्टी से जुड़ा हो तथा यहां के निवासियों के दुख-दर्द से अच्छी तरह से परिचित हो। डॉ. खूबचंद बघेल चाहते थे कि कोई भी बाहरी व्यक्ति छत्तीसगढ़ के लोगों का शोषण ना करें। डॉ. बघेल ने छत्तीसगढ़ के लोगों को अपने अधिकार के लिए लड़ना सिखाया। छत्तीसगढ़ के लोगों का आर्थिक उन्नति चाहते थे। वे चाहते थे कि किसान किसी भी साहूकार या पूंजीपति के चुंगल में ना फंसे, कर्ज के कारण उसे अपना खेती या अन्य संपत्ति ना बेचना पड़े। डॉ. खूबचंद बघेल की इन विचारों पर वर्तमान राज्य सरकार की योजनाओं से परिलक्षित होता है कि डॉ. खूबचंद बघेल ने छत्तीसगढ़ राज्य के सर्वांगीण विकास के लिए जो हो सोचा था वह अब साकार हो रहा है।

वर्तमान में कुछ सालों के दौरान छत्तीसगढ़ में शासन की प्राथमिकताएं बदलने के साथ ही बहुत कुछ बदल गया है। अब शहरों के समानांतर गांव का सर्वांगीण विकास भी सरकार की प्राथमिकता में है। कांक्रीट की इमारतों और डामर की सड़क के अंधाधुंध निर्माण के बजाय किसानों और आदिवासियों के जीवन में बदलाव सरकार की प्राथमिकता में है। अब राज्य की अर्थव्यवस्था के केंद्र में शहरों के बजाय गांव है। इन्हीं प्राथमिकताओं के आधार पर योजनाएं बनाएं और लागू की जा रही है। मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल के नेतृत्व वाली सरकार की सोच है कि समाज के सबसे कमजोर तबके की आर्थिक मजबूती के बिना छत्तीसगढ़ की आर्थिक मजबूती की कल्पना नहीं की जा सकती। इसके लिए जरूरी है कि किसानों, मजदूरों और आदिवासियों को योजनाओं का सीधा लाभ मिले। किसानों को आर्थिक रूप से मजबूत करने के लिए जहां विभिन्न फसलों के लिए प्रोत्साहन राशि दी जा रही है वहीं वनवासियों की आमदनी में इजाफे के लिए लघु वनोपज के समर्थन मूल्य पर खरीदी की व्यवस्था की गई है।

तेंदूपत्ता संग्रहण दर बढ़ाकर 4000 प्रति मानक बोरा और समर्थन मूल्य पर खरीदे जाने वाले लघु वनोपजों की संख्या 7 से बढ़ाकर 52 कर दी गई है। महुआ समेत कई लघु वनोपजों के मूल्य में बढ़ोतरी कर दी गई है। किसानों को सभी प्रकार के फसलों के प्रोत्साहन के लिए राजीव गांधी किसान न्याय योजना शुरू की गई है और अब सरकार इसमें भूमिहीन खेतिहर श्रमिकों को भी शामिल करने जा रही है। सुराजी गांव योजना के तहत रोजगार और आय के नए अवसरों का निर्माण हो रहा है। गौठानों की स्थापना, नदी नालों पर बंधान, जैविक खाद के उत्पादन और पोषाहार की निश्चितता के लिए तमाम तरह की अधोसंरचना विकसित की जा रही है । जिस सामाजिक और आर्थिक न्याय की आस के साथ पुरखों ने छत्तीसगढ़ राज्य का निर्माण किया था, वह खेतों से लेकर वनों तक, अब सभी तक पहुंच रहा है।

सुराजी गांव योजना-

छत्तीसगढ़ राज्य जल,जंगल एवं प्राकृतिक संसाधनों तथा पशुधन संसाधनों से भरपूर है। राज्य में कई प्रकार के पशु जैसे गाय, बैल, भैंस, बकरी आदि कई पाए जाते हैं। राज्य सरकार द्वारा पशुधन के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए गोधन न्याय योजना लागू किया गया है। इस योजना के माध्यम से गोधन का संरक्षण होगा तथा पशुपालकों की आय में वृद्धि होगी जिससे उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत होगी।राज्य में हजारों किस्म की धान,विभिन्न फसलें,साग -सब्जी का उत्पादन होता है। कृषि क्षेत्र में उत्पादन को बढ़ावा देने के साथ-साथ कृषि विकास एवं कृषक कल्याण दोनों एक दूसरे के दो पहलू हैं और दोनों का समग्र विकास तभी संभव है जब राज्य में चार चिन्हारी, नरवा, गरवा, घुरवा एवं बाड़ी का भरपूर विकास हो इसीलिए छत्तीसगढ़ शासन ने सुराजी गांव योजना की परिकल्पना की है जिसके अंतर्गत नरवा, गरवा, घुरवा एवं बाड़ी का विकास कार्यक्रम प्रारंभ किया गया हैस नरवा कार्यक्रम के अंतर्गत राज्य में उपलब्ध जल स्रोतों का संरक्षण करने से ग्रामीण अंचलों में किसानों को पानी उपलब्ध सुनिश्चित होगी और पशु-पक्षियों का जीवन सुरक्षित होगा। आज के रासायनिक खाद के युग में जैविक खाद का उत्पादन को बढ़ावा देना अत्यंत आवश्यक है ताकि किसानों को कम लागत से जैविक खाद उपलब्ध हो और भूमि की उपजाऊ क्षमता को बढ़ाया जा सके। ग्रामीण अंचलों में पशुओं के रखरखाव तथा देखभाल के लिए सामूहिक व्यवस्था नहीं होने से फसल को नुकसान होता है। फसलों को नुकसान से बचाने तथा पशुओं की देख-रेख,सुधार हेतु गरुवा (पशुधन विकास) कार्यक्रम उद्देशित है। प्रत्येक गांव में ग्रामीणों के घरों के पीछे भूमि पर साग-सब्जी,फलों का उत्पादन किया जाता है। परंतु संसाधनों की कमी के कारण ग्रामीणों की बाड़ी विकास कार्यक्रम को प्राथमिकता दी गई है।

डॉ. खूबचंद बघेल स्वास्थ्य सहायता योजना -

छत्तीसगढ़ सरकार की महत्वाकांक्षी स्वास्थ्य योजना डॉ. खूबचंद बघेल स्वास्थ्य सहायता योजना प्रारंभ किया गया है। इसकी शुरुआत 1 जनवरी सन 2020 को छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल द्वारा किया गया। इस योजना के अंतर्गत सभी लाभार्थियों को केंद्र सरकार की स्वास्थ्य मिशन योजना आयुष्मान भारत योजना के

मुकाबले 4 गुना ज्यादा स्वास्थ्य लाभ प्रदान किया जाएगा। योजना के तहत अंत्योदय राशन कार्ड धारकों को 5 लाख रुपये तक का मुफ्त में उपचार की व्यवस्था की गई है। इस योजना को केंद्र तथा राज्य सरकार की स्वास्थ्य बीमा योजनाओं के विलय के बाद शुरू किया गया है।

इस योजना का उद्देश्य राज्य के नागरिकों को गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कराना है। नागरिकों को बीमारी व इलाज के खर्च की चिंता से मुक्त कर उनके स्वास्थ्य का स्तर ऊंचा उठाना। गरीब से गरीब व्यक्ति का स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच सुनिश्चित करना। इस योजना के अंतर्गत पात्र परिवारों की संख्या में विस्तार किया गया है। साथ ही साथ पूर्व की योजनाओं के अंतर्गत अलग-अलग पात्रता मापदंड एवं प्रक्रियाओं,जिनके कारण मरीजों को उपचार हेतु औपचारिकताएँ पूर्ण करने के लिए भटकना पड़ता था, को सरल बना कर उपचार प्राप्त करने की आसान प्रक्रिया सुनिश्चित करना।

निष्कर्ष-

छत्तीसगढ़ के माटी पुत्र, किसान नेता, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, कुशल राजनेता आदि के रूप में विख्यात डॉ. खूबचंद बघेल का नाम सर्वविदित है। छत्तीसगढ़ राज्य में इसका बहुत बड़ा योगदान रहा है। आजादी की लड़ाई से लेकर छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण आंदोलन के रूप में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है । इन्होंने समाज के पिछड़ेपन तथा सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए अनेक प्रकार के सामाजिक आंदोलन चलाए जिसमें वे सफल भी रहे। डॉ. खूबचंद बघेल अपने विरोधियों को भी अपनी बात मनवाने की क्षमता रखते थे। वे लोगों के बीच काफी लोकप्रिय थे, जिससे वे एक लोकनायक के रूप में पहचाने जाते थे।

लोगों की समस्याओं को सहज भाव से सुनते थे एवं उन्हें दूर करने का सरल उपाय निकालने की कोशिश करते थे। सरकार के विरुद्ध भी वे शांतिपूर्ण आंदोलन चलाते थे और लोगों की बात सरकार तक पहुंचाते थे। डॉ.खूबचंद बघेल मध्यप्रदेश की विधानसभा में सदस्य के रूप में छत्तीसगढ़ का प्रतिनिधित्व करते थे, और छत्तीसगढ़ के लोगों की समस्याओं को विधानसभा के समक्ष रखते थे प्वे संसद में भी राज्यसभा सदस्य के रूप में छत्तीसगढ़ राज्य का प्रतिनिधित्व किया है। संसद में भी छत्तीसगढ़ की बातों को प्रमुखता से रखते थे ।

डॉ. खूबचंद बघेल को छत्तीसगढ़ राज्य के प्रथम स्वप्नदृष्टा के नाम से भी जाना जाता है, जिन्होंने सर्वप्रथम छत्तीसगढ़ राज्य की कल्पना की थी। इनके इन्हीं योगदान के फलस्वरूप छत्तीसगढ़ राज्य सरकार द्वारा इनकी स्मृति में कृषि के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए डॉ. खूबचंद बघेल सम्मान स्थापित किया गया है। तथा वर्तमान राज्य सरकार द्वारा इनके नाम पर डॉ. खूबचंद बघेल स्वास्थ्य सहायता योजना प्रारंभ किया गया है। जिससे लोगों को मिलने वाली स्वास्थ्य सुविधाओं को सुगम बनाया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1) छत्तीसगढ़ का इतिहास, डॉरामकुमार बेहार., छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी,रायपुर, 2016 ।
2) छत्तीसगढ़ का समग्र इतिहास,डॉअर्चना शुक्ला (श्रीमती).सुरेश चंद्र शुक्ला एवं डॉ., मातुश्री पब्लिकेशन, रायपुर, 2020 ।

3) छत्तीसगढ़ के अनमोल रत्न, डॉप्रदीप कुमार शर्मा., सरस्वती बुक्स,भिलाई,2020 ।

4) छत्तीसगढ़ सामान्य ज्ञान, नीरज चौधरी एवं संजीव कुमार,लुसेंट पब्लिकेशन,पटना, 2012।

5) छत्तीसगढ़ वृहद संदर्भ,उपकार प्रकाशन,आगरा,2014।

6) छत्तीसगढ़ के महान सपूत डॉखूबचंद बघेल .,हरि ठाकुर ।

7) डॉखूबचंद बघेल ., व्यक्तित्व एवं कृतित्व, शोध ग्रंथ,राजेंद्र कुमार वर्मा,2004 ।

■ ■ ■